उम्र ज़्यादा, जुड़वां बच्चों की संभावना ज़्यादा

उम्र बढ़ने के साथ अण्डाशयों से अण्डोत्सर्ग कठिन होता जाता है। इससे निपटने के लिए ही शरीर में ज़्यादा हारमोन बनता है। मगर किसी-किसी मामले में क्षतिपूर्ति ज़्यादा ही हो जाती है और एक से अधिक अण्डाणु तैयार हो जाते हैं।

ऐसा लगता है कि उम्र बढ़ने के साथ स्त्रियों के अण्डाशय ज़्यादा सक्रिय हो जाते हैं और इसके कारण अधिक उम्र की महिलाओं को असमान जुड़वां बच्चे पैदा होने की संभावना बढ़ जाती है। असमान जुड़वां बच्चे तब पैदा होते हैं जब दो अलग-अलग अण्डाणुओं का एक साथ स्वतंत्र निषेचन होकर दोनों गर्भ में ठहर जाएं।

यह सही है कि उम्र के साथ प्रजनन क्षमता में कमी आने लगती है मगर जिन अधेड़ महिलाओं को बच्चे पैदा होते हैं उनमें जुडवां की तादाद युवा महिलाओं की अपेक्षा ज़्यादा होती है। यह एक विरोधाभास सा लगता है और इसकी कोई संतोषजनक व्याख्या नहीं हो पाई थी। एम्सटर्डम के फ्री युनिवर्सिटी मेडिकल सेंटर के रॉय होम्बर्ग बताते हैं कि असमान जुड़वां बच्चे बनने के लिए एक साथ दो अण्डाणुओं का निषेचन होना चाहिए। पहले ऐसा समझा गया था कि बढ़ती उम्र में महिलाएं परखनली शिशु तकनीक का ज़्यादा उपयोग करती हैं, इसलिए उनमें असमान जुड़वां की संख्या ज़्यादा होती है। मगर होम्बर्ग व उनके साथियों ने आंकड़ों का विश्लेषण करने पर पाया कि सामानय प्रजनन के मामलों में भी ऐसा ही दिखता है। अतः उन्हें शंका हुई कि शायद उम्र के साथ होने वाले परिवर्तन इसके लिए ज़िम्मेदार होंगे।

उन्होंने अल्ट्रासाउण्ड की मदद से कई महिलाओं में अण्डाशय में पुटिका निर्माण की जांच की। पुटिका अण्डाशय में निर्मित एक पिण्ड होता है जिसमें से अण्डाणु निकलता है। कुल 507 महिलाओं में से 105 महिलाओं में एक अण्डोत्सर्ग चक्र (यानी एक मासिक चक्र) में एक से अधिक अण्डाणु निकले। इन 105 में से 95 प्रतिशत महिलाओं की उम्र 30 वर्ष से अधिक थी।

ज़्यादा उम्र की महिलाओं में एक और लक्षण देखा गया - उनमें पुटिका निर्माण को प्रेरित करने वाले हार्मोन एफ.एस.एच. की मात्रा भी अधिक पाई गई। जिन महिलाओं में प्रति मासिक चक्र एक से अधिक अण्डाणुओं का निर्माण हुआ, उनमें एफ.एस.एच. की मात्रा भी बाकी महिलाओं से अधिक थी।

मजेदार बात यह है कि 35 वर्ष की उम्र से लेकर रजोनिवृत्ति तक एफ.एस.एच. की मात्रा बढ़ती जाती है जबकि अण्डाशय कमज़ोर होते जाते हैं। इन अण्डाशयों से अण्डोत्सर्ग कठिन होता जाता है। ऐसा लगता है कि अण्डोत्सर्ग की कठिनाई से निपटने के लिए ही शरीर में ज़्यादा एफ.एस.एच. बनता है। मगर किसी-किसी मामले में एफ.एस.एच. क्षतिपूर्ति ज़्यादा ही हो जाती है और एक से अधिक अण्डाणु तैयार हो जाते हैं। *(स्रोत फीचर्स)*